B.A. History Hon's, Part: II
Paper: III, Unit: I, Date:- Lecture No.: 28
30.10.2020

Session: मुहम्मद गोरी का आक्रमण : स्वरूप एवं परिणाम

मुहम्मद गजनवी ने भारत में तुर्की के इस्लामी सत्ता की दरवाजा खोला और मुहम्मद गोरी ने उससे एक कदम आगे बढ़कर तलवार की नोंक पर दिल्ली सल्तनत की नींव डाली, जिसकी सत्ता अगली तीन शताब्दियों तक भारत में सर्वोच्च बनी रही। अतः मुहम्मद गोरी का आक्रमण महमूद गजनवी की अपेक्षा कहीं अधिक स्थायी प्रभाव वाला सिद्ध हुआ, जिसने भारत में राजनीतिक एवं सामाजिक इस्लामीकरण एक सुदीर्घ प्रक्रिया की शुरुआत हुई।

मुहम्मद गोरी मूलतः गोर राज्य का था, जिसकी स्थापना उसके पूर्वजों ने गजनी तथा हिरात राज्यों के मध्य 10 हजार फीट की ऊँचाई वाले पहाड़ी पर किया था। ये ईरानी थे, जिन्हें महमूद गजनवी ने पराजित कर इस्लाम कबूल करने के लिए बाध्य किया। जब 12वीं सदी के प्रारंभ में गजनी राज्य दुर्बल हुआ, तो गोर के शंसनबी राजवंश ने लम्बे संघर्ष के बाद गजनी पर अपना प्रभुत्व कायम किया। इसी शंसनबी राजवंश के शिहाबुद्दीन ने अपने पिता की मृत्यु के बाद 1173 ई० में गजनी की राजगद्दी सम्भाली, जो इतिहास में मुहम्मद गोरी के नाम से प्रसिद्ध है। मुहम्मद गोरी एक महत्वाकांक्षी सुल्तान था। पश्चिम में ख्वारिज्म के शाहों ने उसके राज्य विस्तार के प्रयत्नों पर पहले ही पानी फेर दिया था, जब वह सेनापति था। अतः उसने सुल्तान बनते ही भारत की ओर रुख किया, जहाँ पंजाब में उसके पुश्तैनी दुश्मन गजनवी राजवंश का शासन था।

सल्तनत सम्भालने के तुरन्त बाद मुहम्मद गोरी ने 1175 में अपने भारत विजय के अभियान का उद्घाटन मुल्तान आक्रमण से किया। गोरी ने एक विशाल सेना लेकर गोमल दर्रे से होते हुए डेरा इस्माइल खाँ के रास्ते उतरी सिन्ध पहुँचकर मुल्तान विजय किया। इसी अभियान में 1176 में उसने भट्टी राजपूतों को पराजित कर कच्छ पर अधिकार जमाते हुए निचले सिंध को जीत लिया। जब उसने गुजरात की ओर रुख किया, जहाँ उसे 1178 ई० में पराजय का सामना करना पड़ा। भारत में यह उसकी पहली पराजय थी।

अब उसने अपने भारत अभियान की दिशा बदल दी और पंजाब की ओर रुख किया। पंजाब में उसने गजनवी शासक को पराजित करते हुए 1179 में पेशावर पर कब्जा जमाया। 1181 में लाहौर के शासक ने आत्म समर्पण कर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। 1185 में गोरी ने स्यालकोट पर कब्जा किया और गजनी लौट गया। परन्तु उसके वापस लौटते ही लाहौर के शासक ने विद्रोह कर अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। मुहम्मद गोरी ने छल-प्रपंच का सहारा लेकर लाहौर के शासक को गजनी बुलाया और उसे पुत्र सहित कारागार में डाल दिया। अब सम्पूर्ण सिन्ध और पंजाब पर उसका आधिपत्य था और उसके साम्राज्य की सीमाएँ पूरब में दिल्ली और दक्षिण में अजमेर राज्य की सीमाओं को छू रही थीं, जिसका अधिपति चौहान राजा पृथ्वीराज तृतीय था।

मुहम्मद गोरी ने अपना दूसरा भारत अभियान पृथ्वीराज चौहान के विरुद्ध 1191 में सरहिन्द से किया और भटिंडा के किले पर कब्जा कर लिया। पृथ्वीराज चौहान ने एक शक्तिशाली सेना लेकर 1191 में तराइन के

मैदान में मुहम्मद गोरी को भारी शिकस्त दी एवं गोरी घायल हो गया और उसकी सेना घायल सुल्तान को लेकर भाग खड़ी हुई। पृथ्वीराज चौहान ने एक भारी रणनीतिक भूल की और तुर्क सेना को सुरक्षित भागने का मौका दे दिया। यह मुहम्मद गोरी की भारत में दूसरी पराजय थी, जिसमें उसे भारी क्षति हुई और घोर अपमान का सामना करना पड़ा।

परन्तु गोरी हार मानने वाला व्यक्ति नहीं था। उसने लगभग एक वर्ष तक तैयारी की और एक लाख बीस हजार सैनिक लेकर भारत विजय के अभियान पर निकल पड़ा। भटिंडा पर पुनर्विजय करते हुए 1192 में तराइन के मैदान एक बार फिर आ डटा। प्रत्युत्तर में पृथ्वीराज चौहान ने भारी तैयारी के साथ पहुँचकर गोरी से घमासान युद्ध किया। परन्तु पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर गोरी ने उसे बन्दी बना लिया। कहा जाता है कि बन्दी पृथ्वीराज की उसने आँखें फोड़ डाली। दिल्ली और अजमेर पर गोरी का कब्जा हो गया। इसके बाद उसने भारत में अपने विजित प्रदेशों को अपने प्रमुख दास कुतुबुद्दीन ऐबक प्रभारी बनाकर गोरी गजनी वापस लौट गया।

1194 में कन्नौज विजय के लिए गोरी एक बार फिर भारत आया। कन्नौज का शासक गहड़वाल राजा जयचन्द्र था, जिसके आँखें में कुतुबुद्दीन ऐबक की तीर लग गई। उसकी सेना में भगदड़ मच गयी। गोरी को आसानी से कन्नौज पर जीत ही नहीं मिली, बल्कि लूट में काफी धन भी हाथ लगा, जिसे लेकर वह पुनः गजनी वापस चला गया।

1196 में गोरी, राजस्थान विजय के लिए पुनः भारत आया। इस अभियान में उसने बयाना के कुमारपाल, ग्वालियर के राजा सुलक्षण पाल के अलावे पश्चिम राजस्थान के मेद तथा चौहान राजपूतों को पराजित कर पूरे राजस्थान पर आधिपत्य स्थापित किया। परन्तु इसके गजनी लौटते ही विभिन्न राजपूत शक्तियों ने गोरी की सत्ता के खिलाफ विद्रोह का सिलसिला शुरु किया, जिसे गजनी से गोरी के निर्देशन में ऐबक ने शमन किया। गोरी 1205 में अन्तिम बार भारत तब आया, जब ख्वारिज्म के विरुद्ध संघर्ष में उसके मारे जाने की अफवाह भारत में फैलने के कारण जहाँ तहाँ तुर्क सत्ता के खिलाफ विद्रोह होने लगे थे। इस अन्तिम अभियान में उसका झेलम तथा चेनाब नदियों बीच खोखरों से हुआ। खोखरों का दमन कर वह लाहौर के रास्ते गजनी लौट रहा था, तो मार्ग में सिन्धु नदी के तट पर खोखरों ने उसकी हत्या कर दी। मुहम्मद गोरी ने इस प्रकार भारत में तुर्क साम्राज्य का निर्माण किया, जिसकी विरासत को ऐबक ने सम्हाला।

☐ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी०बी० कालेज, जयनगर